– द्वितीय अध्याय –

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों का सामान्य परिचय

अश्क का परिचय साहित्यकार के रुप में सर्वप्रथम कहानी लेखक के माध्यम से हुआ। अश्क की लेखन के प्रति रुचि उनके शिक्षा काल से ही देखी जा सकती है। जब वे विद्यार्थी थे, तभी उनकी उर्दू कहानियों का संग्रह प्रकाशित हो चुका था, जिसका नाम 'नौरतन' था। १९३३ ई. में 'औरत की फितरत' के नाम से उर्दू कहानियों का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। इनकी प्रथम हिन्दी कहानी प्रेमचन्द द्वारा सम्पादित 'हंस' मासिक पत्रिका में सन १९३३ में छपी। हिन्दी कहानी लेखन की प्रेरणा इन्हें मुंशी प्रेमचन्द से प्राप्त हुई थी। इसके अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी, हरिकृष्ण प्रेमी तथा उदयशंकर भट्ट से भी इन्हें पर्याप्त प्रोत्साहन मिला।

अश्कजी यद्यपि प्रगतिशील दृष्टि सम्पन्न कहानीकार है, फिर भी विषय-वस्तु, भाषा शैली एवं दृष्टिकोण को देखकर ऐसा ज्ञात होता है कि प्रेमचंद संस्थान के कहानीकारों की समस्त विशेषताएं न्यूनाधिक मात्रा में उनकी कहानियों में उपलब्ध होती हैं।

अश्कजी ने अपनी कहानियों के विषय भी अपने पूर्णत: परिचित समाज के मध्य वर्ग अथवा निम्न-मध्य वर्ग से चुने हैं और यही कारण है कि अश्क के कहानी साहित्य में समाजगत विडम्बनाओं, कुप्रथाओं, कुरीतियों, कुसंस्कारों एवं विभीषिकाओं का उन्मुक्त चित्रण हुआ है। कहानियों के प्रधान विषय नैतिक, व्यंग्य एवं समाज की कटुतम आलोचना से सम्बन्धित है। नित्य प्रति की समस्याएँ और मध्य-वर्ग का जीवन उनकी कहानियों के प्रतिपाद्य हैं।

अश्क की कहानियों में जीवन के विभिन्न दृष्टिकोण, अनुभूतियों की अभिव्यंजना में पर्याप्त वैविध्य मिलता है। इसका कारण है कि अश्क ने जीवन को निकट से देखा है, उसका अनुभव किया है, स्वयं विविध प्रकार के जीवन से निकट संपर्क स्थापित किया है। इनकी कहानियों में व्यक्त जीवन में गहराई है,

विचारों मे निर्णय लेने की शक्ति और अनुभूतियों में स्पन्दन है। अपने पात्रों की भावनाओं के अन्तर्द्वंद्व के माध्यम से ही इन्हों ने परिवर्तित समाज की बदलती निगाहों का चित्रण किया है और परम्परागत अमान्य प्रथाओं के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है।

कहानी कला का मूल आधार मानव चरित्र है और इसकी मानव प्रवृत्तियों का विशुध्द मनोवैज्ञानिक उद्‌घाटन ही कहानीकार की पूर्णता का प्रतीक है। अश्क की दृष्टि चिन्तक होने के साथ ही सामाजिक कुप्रवृत्तियों की आलोचना, समाज सुधार और मानसिक संघर्षों के अन्तर्द्वंद्वों के उभारने की ओर विशेषत: रही है। अश्क जी का कथन है, "व्यक्ति के दर्द का आभास मिला और मानव की अनजानी-अनमापी गहराईयाँ ही सामने नहीं पडीं, सामाजिक व्यवस्था के उस चक्रव्यूह का भी पता चला, जिसके अंदर फँसा इन्सान मरकर ही निकल पाता है।"१

अश्क की कहानियों में प्राय: यथार्थ का चित्रण है, जीवन के वास्तव की अभिव्यक्ति है, सामाजिक मान्यताओं का विवेचन है, परंतु यथार्थ आदि को रुपायित करनेवाली जीवन - दृष्टि व्यक्ति - मूलक है और सामाजिक मान्यताओं को परखने की कसौटी व्यक्ति - सत्य की है। इनके 'सामाजिक यथार्थ' के मूल में 'वैयक्तिक यथार्थ' से प्रेरित जीवन दृष्टि है।

अश्कजी ने लगभग १५० कहानियों की रचना की है और इनकी रचना प्रक्रिया ने मोड भी लिए है। इसके यथार्थ की अनुभूति जिस तरह पकती गई है, कल्पना तथा भाव से विचार में और विचार से संवेदना में परिणत हो गई है, उसी तरह इनके कहानी-शिल्प में भी निखार तथा मंजाव आता गया है।

अश्कजी ने पाश्चात्य कहानीकारों से प्रेरणा भी ली है। इनमें मोपाँसा, मॉम, ओ हेनरी, चेखव आदि नामों को गिनवाना इन्होंने आवश्यक समझा है।

मंटो, कृश्नचंद्र, राजेन्द्रसिंह बेदी की कहानी कला की भी गहरी छाप इनकी रचना-प्रक्रिया पर अंकित है।

अश्कजी की कहानियों को कहानीगत चित्रणों के आधार पर डा. अहिबरन सिंह ने निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है -

१) सोद्देश्य सामाजिक कहानियाँ - क) समस्याप्रधान

ख) भाव प्रधान

ग) आदर्श प्रधान

घ) नीति प्रधान

२) ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक कहानियाँ

३) यथार्थवादी कहानियाँ

४) प्रकृतवादी कहानियाँ

५) राजनैतिक या राष्ट्रीय कहानियाँ "२

इसी प्रकार अन्य एक आलोचक ने अश्क की कहानियों का चार वर्गों में विभाजन किया है -

१) हास्य और व्यंग की कहानियाँ

२) चरित्र प्रधान कहानियाँ

३) सांकेतिक एवं दुरुह कहानियाँ, जिनका शिल्प प्रयोग प्रधान है।

४) समस्यामूलक कहानियाँ

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों का सामान्य परिचय इस प्रकार है --

१) पिंजरा - (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९४५, प्रकाशक - नीलाभ प्रकाशन गृह, ५, खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद।

यह अश्कजी का पहला कहानी संग्रह है। इसकी कहानियों में भावुकता भरी

कटुता है, जो सीधी हृदय को चीरती चली जाती है। पारिवारिक जीवन के अन्यान्य पहलू, समाज मे स्थित वर्गभेद, शोषक वर्ग की निम्न स्थितियां इन यथार्थताओं का पर्याप्त चित्रण अश्क ने अपने पहले कहानी संग्रह की कहानियों में किया है।

पारिवारिक संघर्षो का वास्तव चित्रण 'खिलौना' और 'दूलो' इन कहानियों में मिलता है। 'खिलौने' कहानी भाई-भाई के बीच तनाव, मारकाट और बूढे बाप का उस पर विवश रहना इन्हीं बातों तक सीमित है। किंतु इस कहानी को गहराई से देखा जाय, तो वह मात्र परिवार की नहीं, किन्हीं भी दो व्यक्तियों, दो जातियों, दो राज्यों, दो देशों के बीच का तनाव और संघर्ष उजागर करती है। कहानी के चारों भाई अपनी अपनी आँखों पर अहं का अंधापन छा लेते हैं। यही स्वार्थ और अंधापन एक दूसरे का विश्वासघात करने पर मजबूर करता है। मर्यादा का भंग करनेवाले इन मानवों को देखकर बूढा, असहाय बाप सोचता है, - "ये इतने असंख्य लोग - ये सब खिलौने ही तो हैं, किंतु ये सब अपने बनानेवाले को भूले हुए हैं। --- शायद वह, वह महान निर्माता भी उसकी भाँति बूढा हो चला है।"३ अहं की क्षति और स्वार्थांधता के कारण पैदा हुई लड़ाई में बूढे बाप की मौत कहानी के मुख्य स्वर को विस्तार देती है।

'दूलो' कहानी में कमाऊ बेटे और बहू के होते हुए लछमी बुढिया चौराहे पर खडी-खडी भीख मांगती है। यह विघटन आज हम संयुक्त परिवार में ही नहीं, विभक्त परिवार में भी देखते है।

अश्कजी ने 'माँ', 'मरुस्थल' इन कहानियों में पारिवारिक समस्याओं का चित्रण किया है। शराबी पति और अनुत्तरदायी बेटे के लिए अपना सब कुछ निछावर करनेवाली 'माँ' कहानी की माँ बेटे की शादी के अवसर पर कर्ज निकालती है और शादी के बाद कर्ज चुकाया कैसे जाय, इस समस्या के सामने घुटने टेक देती है।

समझदारी और अपनत्व का अभाव हम 'मरुस्थल' कहानी के देवदत्त में देखते हैं, जिसके कारण नायिका ज्ञान अंततः आत्महत्या कर देती है।

सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से इस संग्रह की 'डाची' कहानी बहुचर्चित रही है। 'डाची' कहानी के बाकर को खरीदी हुई सांडनी चुपचाप मशीरमाल साहब को देनी पडती है। गरीब और निम्नवर्ग का होने के कारण बाकर में इतना भी साहस नहीं कि वह सांडनी को किसी और के हाथों सौंपते आनाकानी करता।

'गोखरु', 'पत्नीव्रत' तथा 'नन्हा' इन कहानियों में नारी स्वभाव की दुर्बलता का चित्रण है। 'गोखरु' कहानी में नारी स्वभाव की एक ऐसी कमजोरी सामने आती है, जिस को आधार मानकर मोपांसा ने 'नेकलेस' और प्रेमचंदने 'गबन' ये रचनायें लिखी थीं। 'गोखरु' की नायिका के मन में अलंकारों के प्रति मोह है। महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या नारी के लिए गहनों का आकर्षण सदा एक जैसा रहता है ? गहनों को बुरी तरह से चाहने की सलाह मंसा को उसकी माँ मलावी देती है। "समय-समय पर गहना ही हिन्दू स्त्री के काम आता है, इसलिए नासमझी में अपना गहना गंवा न देना।"४ अपनी मृत बेटी के शव की अपेक्षा मलावी गोखरु अधिक प्यारे समझती है। लेकिन अंत मे मलावी वह गोखरु किसी न किसी लडकी के शरीर पर चढते हुए देखने की उत्कट इच्छा प्रकट करती है। ऐसा क्यों ? मलावी के मन का यह संघर्ष, नारी स्वभाव की मानसिकता को स्पष्ट कर देता है। 'पत्नीव्रत' कहानी की लक्ष्मी भी अपनी चूडियों को मृत्युपर्यन्त इसी मात्रा में चाहती है। इस कहानी का नायक दो-दो औरतों से प्यार करता है। पुरुष की इस प्रवृत्ति को चाहे कुछ भी कहा जाय, है यह पूर्णतः वास्तविक। कहानी में पुरुष मात्र का स्वभाव मुख्य नहीं है। मनुष्य स्वभाव में जीने की ललक, पाने की प्यास बुनियादी तत्व है। मनुष्य का काम पीने से, पेय से, प्याला कोई भी हो, अंतर नही पडता। यह तथ्य पुरुष पर जितना लागू होता है, उतना नारी पर भी। हम पुराने को छोडकर नये को भी उसी तरह से चाह सकते

हैं, चाहते भी हैं, इसके लिए पुराने को मिटा भी सकते हैं।

'नन्हा' यक्ष्मा की मरीज शीला की कहानी है। मृत्यु के सामने साक्षात्कार के समय मनुष्य किन किन अवस्थाओं में गुजरता है और मातृत्व का बोझ ढोनेवाली स्त्री किस कदर विवश हो जाती है, इसका यथार्थ वर्णन इस कहानी मे है। यह कहानी शीला के उमड़ने की और उमड़-उमड़ कर बरस जाने की नारी हृदय की प्रकृत लालसा की विवशता का सजीव प्रतीक है।

अश्कजी ने मनोवैज्ञानिक यथार्थ की भी गहरी अभिव्यक्ति की है। 'जीवन' कहानी में पागलखाने का यथार्थ वर्णन है और एक पागल के आचरण का, पागलपन का मनोवैज्ञानिक यथार्थ भी। व्यक्ति के पागल बन जाने में उसकी पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक स्थितियाँ, भोजन की कमी और रिश्तेदारों का विश्वासघात जैसी बातें कारण होती हैं।

निचले वर्ग से ऊपर उठे व्यक्ति के मानसिक परिवर्तन को आधार बनाकर लिखी गई 'पिंजरा' कहानी मध्यवर्गीय नारी की मानसिक घुटन और घुटन का समर्थन देनेवाले बुर्जुआ संस्कारों के प्रति उसकी हार प्रकट करती है। इस कहानी में अश्क ने निम्न वर्ग और निम्न वर्ग से ऊपर उठे निम्न-मध्यवर्ग की मानसिक दरार को रेखांकित कर निम्न-मध्यवर्ग की दिखावटी सभ्यता का पर्दाफाश किया है। शांति के मन पर मध्यवर्गीय जीवनमूल्य शासन करते हैं, जिनके पिंजरे में बंद वह अपनी मानवीयता को नकार देती है। पति और बच्ची के बीमार पडने पर गरीब गोमती ने शांति की पूरे मनोयोग से सहायता की और शांति ने प्रभावित होकर गोमती को बहन माना। कालांतर से शांति गरीब न रही, इसलिए वह गोमती के साथ पुरानी निकटता नहीं रख सकती। उसका पति चाहता है कि वह गोमती से मिले नहीं, क्यों कि गोमती उज्जड, गंवार और घिनौनी है, उसके पास आने से इज्जत में कलंक लगता है। कहानी के अंत

में शांति भी अपने पति से सहमत होकर अपनी मजबूरी प्रकट करनेवाला पत्र फाड डालती है। मध्यवर्गीय समाज की कृतघ्नता की प्रवृत्ति पर शांति इस प्रकार एक तीखा व्यंग्य है।

हम जिन्हें दलित, गंवार, गंदे और असभ्य मानते हैं और जिन्हें हम सुसंस्कृत तथा सभ्य कहते है, मूलत: परस्पर विरोधी आचरण करते हैं। 'सभ्य-असभ्य' कहानी का बीमा-एजंट अपने भाई की मृत्यु के बाद शोक नहीं करता, बल्कि भाई को कोसता है कि मरने से पहले उसने अपने बीबी-बच्चों के नाम पर बीमा क्यों नहीं करवाया ? यही कारण है कि इस बीमा एजंट के मृत भाई की संतानें अनाथ बन जाती हैं। दूसरी ओर पांच पांच बच्चों की मां, दलित वर्ग की जमादारिन अपने जेठ की पत्नी मर जाने के बाद जेठ के बच्चे अपने घर ले आती है। सदाचार और सद्भावना का ढोल पीटनेवाले मध्यवर्गीय सफेद पोश समाज पर 'सभ्य-असभ्य' में लेखक ने गहरा आघात किया हैं और सभ्यता के आवरण में छिपी बर्बरता और स्वार्थ को नंगा कर दिखाया है। 'पाषाण' में मनुष्य को स्वार्थ और सतर्कता की भावना कठोर, क्रूर, निर्मम बना देता है, इस का चित्रण है। जगत और उसकी बीमार पत्नी के साथ पूरा परिवार पाषाण की तरह पेश आता है, उनकी विवशताओं को देखकर भी उनसे दूर-दूर हो जाता है। जग्गू का भाई कैलास जग्गू के बेटे अरुण के साथ निर्मम पत्थर होकर व्यवहार करता है, किन्तु जगत की पत्नी की मृत्यु के उपरांत जिस तरह वात्सल्य का झरना कैलाश के अंदर फूट पडता है, यह स्वभाव की प्रकृति स्पष्ट होती है।

'मोती' कहानी एक कुत्ते की दर्दनाक ट्रेजेडी ही नहीं, मानव स्वभाव के अंतर्निहित क्रूरता, पशुता एवं जंगलीपन का दर्पण भी है। लाड़-प्यार से पाले कुत्ते को घर से भगाया गया किन्तु वह अपनी स्वभावगत ईमानदारी से मजबूर होकर भागा नहीं। उसे भंगी द्वारा जहर दिलवाने का प्रयत्न किया गया। किन्तु अंत में वह अंधा, थका हारा फिर उसी मालिक के पास लौटा।

२) **निशानियाँ : (कहानी संग्रह)**

प्रकाशन वर्ष १९४७, प्रकाशक : नेशनल इन्फरमेशन एण्ड पब्लिकेशन लिमिटेड, अपोलो बंदर १ ।

इस कहानी संग्रह में अधिकांश कहानियाँ प्रेम कहानियाँ हैं। इस मे १७ कहानियाँ संकलित हैं। आरम्भिक काल की रचनाएँ होते हुए भी रस एवं मनोरंजन की दृष्टि से अच्छी हैं।

'चट्टान' कहानी की भाभी, हृदय की वास्तविक लालसाओं और जरुरतों के अपूर्ण रहने के कारण मानसिक रोग का शिकार बन जाती है। पुरुष के अहं की, आदर्शों की चट्टान सामने खडी पाकर नारी अपनी लालसाओं, इच्छाओं को दुगुने जोश और जोर के साथ पूरा करने में जुट जाती है। यहाँ भाभी के मन का आवेग, प्रबल इच्छाओं की नदी सामनेवाली चट्टान के कारण रुकती नहीं, मुडती है और मुडकर स्वाभाविक रुप से बहती है। पहले मनोहर की ओर, बाद में शंकर की ओर। भाभी की हिस्टेरिया का कारण यही मानसिक तनाव है और इस तनाव से मुक्ति पाने के प्रयास में उसके मन में विवाहोत्तर यौन सम्बन्ध की लालसा बलवती होती रहती है।

'नज्जिया' कहानी रामरतन हसरत नामक युवा मिलिटरी क्लर्क और इराकवासिनी भारतीय नर्तकी नज्जिया के प्यार को रोमांटिक ढंग से प्रकट करती है। नारी के अहं और दिल के टूट जाने का जहाँ तक सवाल है, कहानी का कथ्य मनोवैज्ञानिक है, किन्तु रोमानी वातावरण में ढँका होने के कारण कहानी रोनांटिक बन जाती है।

'बदरी' कहानी में रोमानी प्रेम का पारंपारिक त्रिकोन है, वियोग और मिलन की घडियों का चित्रण है। काशी को मार डालने का बदरी का प्रयत्न और काशी का बच जाना, काशी और पहाडी सुंदरता की मूर्ति - मुर्नू का मिलन - जैसी

मेलोड्रामाटिक घटनायें हैं।

प्यार को मृत्यु और बरबादी से बेहतर माननेवाली दिलफेंक, रोमांटिक प्रवृत्ति 'जादूगरनी' कहानी में चित्रित है। 'जादूगरनी' कहानी की रुपगर्विता नायिका अपने रुप के गर्व में किसी से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखती थी। केवल युवा गड़रिये की ऊँची तानें उसे कभी-कभी अपनी ओर खींचती रहती थी। जादूगरनी के महल में आग लग जाने पर उसी गड़रिये ने जादूगरनी को बचाया, किन्तु स्वयं मर गया। प्यार में त्याग और आत्मबलिदान की शर्त लगानेवाली 'जादूगरनी' अब नया गांव बनने पर भी पुराने गांव के खंडहर में घूमने लगी।

'चित्रकार की मौत' कहानी में जगत, लालचंद और राधारानी का प्रेमत्रिकोण रोमांटिक और पारंपारिक कथानक पध्दति में ढला हुआ है। लालचन्द एक अच्छा चित्रकार है। वह अपनी सहपाठिन राधारानी से जो एक चित्रकार भी है, प्रेम करता है। किन्तु राधारानी जगत से प्रेम करती है। कुछ मामूली से मतभेद के कारण राधारानी और लालचन्द में झगडा हो गया। राधारानी ने कॉलेज प्रदर्शनी प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया। लालचन्द ने अपना एक चित्र राधारानी के नाम से उसमें भेज दिया, जिसे प्रथम पुरस्कार मिला। किन्तु राधारानी ने उस पुरस्कार को मीठी कृतज्ञता के साथ लालचन्द को लौटा दिया और जगत से विवाह कर लिया।

'निशानियाँ' कहानी की नवयुवती सरला एक विवाहित पुरुष से प्रेम करने लगती है। वह जानती है कि इस प्रेम का कोई नतीजा नहीं है। उसकी शादी हो जाती है। बिदाई के पहले वह कहानी नायक के पास आती है और उसकी एक छोटीसी संगमरमर की डिबिया को निशानी के रुप में उठा ले जाती है।

'वह मेरी मंगेतर थी' कहानी दलित जीवन की गरीबी, बेबसी और लाचारी को स्पष्ट करनेवाली कहानी है। गरीब और असहाय मुर्तू उसके अपने मंगेतर की आँखों के सामने दारोगा की वासना का शिकार हो जाती है। मुर्तू के प्रेमी को पीट पीट कर

दारोगा और सिपाही अधमरा कर देते हैं। एक साल बाद मुर्तू वेश्या बनायी जाती है। और मुर्तू का मंगेतर चौकीदार बन जाता है।

'नासूर' एक असफल प्रेम की कहानी है। इस में सुंदर चित्रकार युवती सुरजित को कलाकार युवा शिक्षक से होनेवाले अपने प्रेम का गला घोंटकर अपने बूढे दादा की इच्छा के अनुसार किसी धनी युवक से विवाह कर लेना पडता है।

'पहेली' कहानी में वेश बदल, बहुरुपिया बनकर स्त्री की परीक्षा कर आदर्शवादिता के प्रदर्शन में कष्ट भोगनेवाले पति की कहानी है।

'माया' कहानी उस यथार्थता का उद्घाटन करती है कि हर आदमी के वास्तविक जीवन में कोई न कोई रोमांटिक छाया किसी न किसी रुप में अवश्य डोलती रहती है।

'जुदाई की शाम का गीत' एक रोमांटिक कहानी है। माधो और मिन्नो देहात में रहनेवाले दो प्रेमी है। शहर में आयी राजरानी ने इनके प्रेम में बाधा डाली। धन के जोर पर माधो को अपने जाल में फँसा लिया। माधो राजरानी से विवाह करने के लिए तैयार हुआ। किन्तु मिन्नो इसे सह न सकी। मिन्नो ने माधो से सिर्फ एक दिन अपने साथ बिताने की, मीठी बाँसुरी सुनाने की प्रार्थना की। माधो ने यह प्रार्थना स्वीकार की। दिनभर दोनों साथ रहे और दिन ढलते ही मिन्नो ने माधो को अपनी भुजाओं में बांधकर चट्टान से कूद लगाई और अपने प्रेम की पूर्ति कर ली।

'अमर खोज', 'कुलाँच', 'पुण्य का परिणाम', 'मरीचिका', 'तारबाबू', 'नरक का चुनाव' इन कहानियों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, विकृतियों का सम्यक् उद्घाटन किया गया है। इन कहानियों में जीवन के खोखले अंगों का प्रदर्शन किया गया है।

३) छींटे : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९४९, प्रकाशक : भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

प्रस्तुत संग्रह में हास्य-व्यंग्य की बयालिस कहानियाँ संग्रहीत हैं। कहीं व्यंग्य स्थूल है, तो कहीं सूक्ष्म है।

'झटके' कहानी के माध्यम से मनचाहा साथी चुनकर विवाह करनेवालों की क्या गत बनती है, समाज के बदचलन लोग भी उनपर कैसे-कैसे ताने मारते हैं, इस वास्तविकता को स्पष्ट किया है।

'रोबदाब' कहानी में पत्नी किसी और के प्रति आकर्षित न हो, पति की गुलाम बनी रहे, यह हर पुरुष की स्वाभाविक इच्छा होती है और इसकी पूर्ति के लिए कभी-कभी वह किस हास्यास्पद स्थिति से गुजरता है, इसका सही सही चित्रण है।

'चारा काटने की मशीन' कहानी सामाजिक अस्तित्व की अनिवार्य शर्त को प्रकट करती है। लहनासिंह नामक सरदारजी इस्लामाबाद जाकर अपनी शक्ति के बल पर एक भागे हुए मुसलमान का घर हथिया लेता है। किन्तु बाद में उनसे भी बलवान व्यक्ति उस घर में घुसकर अपनी ताबेदारी घोषित करता है।

'मनुष्य-यह' कहानी में वासना का प्रकृत रुप दिखाई देता है। आठ साल तक विवाहित जीवन बिताने के बाद पं. परसराम की पत्नी मर गई, तो वे उस समय दूसरी शादी की बात सोच भी नहीं सकते थे। किन्तु कुछ ही दिनों में पंडितजी के मन में अपनी साली को देखकर प्यार का नया सोता फूट पडता है।

'तकल्लुफ' कहानी में आवास की समस्या के कारण आजकाल नागरी जीवन में मध्यवर्गीय आदमी किन किन लाचार और दयनीय स्थितियों से गुजरता है, यह दिखाया है।

'चपत' कहानी की शादी-शुदा औरत भी अपना काम निकालने का लिए अपने स्त्रीत्व को औजार के रुप में प्रयुक्त करती है।

'डा. वेदव्यास और उनकी दूसरी पत्नी' तथा 'चोरी-चोरी' इन कहानियों में किसी न किसी कारण पारिवारिक विघटन की स्थितियां दिखाई गई हैं।

'जब संतराम ने बेलना उठाया' कहानी में मध्यवर्ग में वर्तमान यौन मूल्यों की वास्तविकता आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत की गई है। इन परिवारों की स्त्रियां अपने नौकर छोकरे का या तो खून चूसती है या उनके साथ रास रचाती है।

'लेरिंजाइटिस' कहानी नकली साहित्य की नकली दुनिया का पर्दाफाश करती है। बाढपीडितों की सहायता करने के लिए बुलाये गये कवि सम्मेलन, वहाँ पढ़ी जानेवाली वासनाप्रधान कविताएँ आदि पर इस कहानी में गहरा व्यंग्य किया गया है।

'दलदल' कहानी में फिल्मी दुनिया के अनाचार दिखाते हुए अश्कजी ने यह दिखाया है कि बुजुर्ग से बुजुर्ग और परंपराप्रिय व्यक्ति भी इस फिल्मी दुनिया की दलदल में फँस सकता है।

अल्प वेतन पाकर, काम का बोझ ढोनेवाले अखबारों के कर्मचारियों के जीवन की दर्दनाक स्थिति पर 'हमारा पहला त्यागपत्र' कहानी व्यंग्य करती है।

'पुनर्मूषक' कहानी बुध्दीजीवियों के दिमागी लकवे की अर्थात अंधविश्वास की कड़ी आलोचना है, जो लेखक के बुध्दिवादी एवं यथार्थवादी होने का प्रमाण है।

'मोहमुक्त हो' कहानी में डिप्टी और उसकी पत्नी के अंधविश्वास का मखौल उडाकर अश्कजी ने साधुओं की नकाब उतारी है और समाज में पनपनेवाली बुध्दिहीनता और अन्धविश्वास जैसी बुराईयों की ओर स्पष्ट संकेत किया है।

'नेता' कहानी में इस देश के राजकीय माहौल में ढोंगी नेताओं की झूठी नेतागिरी का वर्णन है।

विभाजन के अवसर पर असहाय लोगों की मजबूरी का फायदा उठानेवाले लोगों

A
11995

की संकीर्ण मनोवृत्ति का चित्रण 'ज्ञानी' कहानी में किया गया है।

'अभाव' कहानी में तपस्वी और ज्ञानी होने का प्रण कर सब कुछ त्याग कर, निकल पडनेवाले राजकुमार का चित्रण किया गया है। अंत में उसके वर्षों के संचित तपोबल को एक मामूली-सी किन्नरी डिगा देती है।

'पछतावा' और 'तख्तमहल' कहानी यौन भावना के प्रकृत रुप का उद्‌घाटन यथार्थ रुप में करती है।

पारिवारिक जीवन की विषमतापूर्ण स्थिति को 'बीतरागी' में, तो अस्पतालों में रोगियों की अनुचित देखभाल को 'मिस्टर घाटपांडे' में यथार्थ अभिव्यक्ति मिली है।

'छिद्रान्वेषी' कहानी में आलोचक की तीखी, पैनी दृष्टि का चित्रण है।

'सम्वाददाता' कहानी मनुष्य स्वभाव की प्रदर्शन प्रवृत्ति पर प्रकाश डालती है।

'गली का नाम' कहानी में व्यक्ति की अहंभावना तथा आत्मश्लाघा के प्रदर्शन की हंसी उडाई गई है।

'गिलट' कहानी की सम्पूर्ण कथा दस पंक्तियों में ही समाप्त हो जाती है, जिसमें मनुष्य की वास्तविकता पर सोने और गिलट की अंगूठियों के माध्यम से व्यंग्य किया गया है।

४) **दो धारा : - (कहानी संग्रह)**

प्रकाशन वर्ष १९४९, प्रकशाक : नीलाभ प्रकाशन गृह, ५, खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद।

इस संग्रह में अश्क दंपति की पाँच-पाँच कहानियों के अतिरिक्त एक रेखाचित्र भी है। कहानियाँ लेखक की शैली के गांभीर्य का प्रतीक है। अश्क की प्रत्येक कहानी में अश्क का व्यंग्य, कला का परिष्कार रुप तथा सौष्ठव दिखाई

देता है।

'कैप्टन रशीद' कहानी में भाई-भतीजावाद के अनाचार को नकारनेवाला कैप्टन रशीद अपनी पूरी ताकत के साथ व्यवस्था को साफ और आदर्श रखना चाहता है, किन्तु व्यवस्था उसकी तनी हुई रीढ़ को बरबस झुका देती है और कैप्टन रशीद भी उसी भ्रष्टाचार का अंग बनकर रह जाते हैं।

'खटक' और 'टेबल लैंड' कहानियाँ हमारे देश में युध्दोपरांत (द्वितीय महायुध्द) पनपी हुई स्वार्थान्धता, सांप्रदायिक दंगे, पूँजीपतियों की जंगली लालसा, जो निम्न-मध्यवर्ग के लोगों का खून चूसती है।

'बच्चे' कहानी मनोवैज्ञानिक सत्य को प्रस्तुत करती है। 'बच्चे' कहानी की माँ एक ओर अपने पति को प्यार करती है, तो दूसरी ओर बच्चे को भी उसी मात्रा में चाहती है। लेकिन मजबूरी यह है कि श्री कोलारकर बच्चे की तरह ज़िद कर अपनी पत्नी को चाहते हैं और बच्चा अपनी माँ पर अधिकार जमाना चाहता है। बाप और बच्चे में चलती हुई यह ईर्ष्या एक दूसरे में परिवर्तित होते, बाप के बच्चे जैसे और बच्चे का बाप की तरह बन जाने की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का परिणाम है। श्रीमती कोलारकर अपने पति और बच्चे दोनों की चाहनाओं को समझती है, इसलिए दोनों से प्यार कर उन्हें सुला देती है। स्वयं अश्कजी ने कहा है, "यहाँ बच्चा ही नहीं, उसका पिता भी उस नारी के आगे बच्चा बन जाता है।"५

'आ लडाई आ, मेरे आँगन में से जा' कहानी में छोटी छोटी बातों पर छिडनेवाले बडे बडे युद्ध, लड़ाईयाँ, झगडे किस प्रकार अर्थहीन और हास्यास्पद होते हैं, इसका व्यंग्यपूर्ण चित्रण है।

अन्य कहानियाँ अश्कजी की हास्य व्यंग्यप्रधान कहानियाँ हैं, जिन मे 'आर्टिस्ट', 'डाँकी', 'केवल जाति के लिए', 'चैत्र शुक्ल तृतीया', 'क्लर्कों का

मज़ाक', 'प्रचार मन्त्री', 'फ़तूर', 'अस्त्र', 'नहूसत', 'तमाचा', 'नमक ज़्यादा है', 'रसपान', 'गुड की अंदरखी', 'स्पोर्ट मैन' आदि कहानियाँ हैं। इन कहानियों द्वारा समाज की आलोचना तथा व्यक्ति के मनोविज्ञान की व्याख्या का सुन्दर प्रयास किया गया है।

'माया' कहानी इस संग्रह से पहले 'निशानियां' कहानीसंग्रह में प्रकाशित हो चुकी है।

'फर्लो' कहानी में अश्कजी ने वेश्या की दयनीय अवस्था का चित्रण किया है, और साथ ही उनकी ओर देखने का पुरुष का वासनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। कहानी नायक चेतन ट्रेन से सफर कर रहा है। बीच के ही स्टेशन पर कुछ स्त्री-पुरुष गाडी में आतें हैं। उनकी ओर देखते ही चेतन को लगता है कि ये लोग सुसंस्कृत नहीं है। फिर डिब्बे में दूसरे मुसाफिरों का उनकी ओर देखने का दृष्टिकोण तथा उन स्त्रियों के प्रति किया गया घृणात्मक व्यवहार इनके माध्यम से इस कहानी में वेश्याजीवन का दयनीय पक्ष उभारा गया है।

५) <u>बैंगन का पौधा</u> : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९५०, प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन गृह, ५ खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद ।

इस कहानी संग्रह में अश्कजी की कुल ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों में अश्कजी की नई प्रतिभा का आकर्षण और कला की अल्लड़ता दिखाई देती है।

इस संग्रह में 'दो आने की मिठाई' कहानी में दो दो आने में खरीदे जानेवाले नौकर लडके को देखकर गरीबों की दशा सामने आती है। पाई-पाई के लिए मोहताज गरीब और निम्नवर्ग के ये पात्र अश्क की इस कहानियों में सजीव हो उठे हैं। इनकी ट्रेजेडी उनके समूचे जीवन में व्याप्त है।

'हाईट के हिज्जे' कहानी में लेखक ने हमारे घर-परिवार और स्कूलों में बच्चों पर होनेवाले घातक संस्कारों का चित्रण किया है।

'जवानी का रुमान' में नायक के माध्यम से गाँवों की ओर चलने का गांधीवादी रोमांटिक नारा है। 'बैंगन का पौधा' का बूढा सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधि है।

'कुन्ती' में कुन्ती जो कि एक सुशिक्षित लडकी है, बरसात की डरावनी रात में अपने घर के सामने किसी युवक को देखती है। घर में लेकर उसके होश लौटाये जाते हैं। वह गोरे गोरे पैरोंवाला, परिश्रमी, नेक, सच्चरित्र युवक कुन्ती का प्रेमपात्र बनता है। अंत में वह देखती है कि वह युवक शादी-शुदा है।

'डाकू' में एक मामूली डाकू सम्राट सिकंदर की पत उतारता है और सुनकर भी महान सिकंदर चुप रह जाता है, यह बात अविश्वसनीय एवं रोमांटिक लगती है।

'राजकुमार' में भौतिक जीवन की लालसाओं को त्याग अध्यात्म और तपोबल की शरण में जानेवाले राजकुमार और अपनी भौतिक परिस्थितियों में उलझी राजनर्तकी कुमुदिनी स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के यथार्थ का उद्घाटन करती है।

'मानव या दानव' मानवी भिन्नता का ऊँचा आदर्श सामने रखनेवाली यह कहानी एक ओर मनुष्य की स्वार्थांधता पर आधारित है, तो दूसरी ओर नेकी, ईमानदारी और सच्चाई के रोमानी आदर्शों का भी प्रतिपादन करती है।

'एरोमा' में स्वार्थ की प्रकृत लालसा हरिकुमार और प्राणनाथ के बीच दीवार बनकर खडी हो जाती है। स्वार्थभावना के अति प्रबल होने के कारण डा.हरिकुमार अपनी मित्रता को दूर कर प्राणनाथ को मरवा डालता है।

'पाप का आरंभ' एक परिवार के विघटन की कहानी है। पति और पत्नी अगर अपने अपने कर्तव्य और दायित्व का उचित पालन न करें, तो परिवार के टूटने में

देर नहीं लगती। आरम्भ मे पत्नी के प्यार में डूबा पति दूसरी औरत के प्रेम में फँस जाता है, तो हारी हुई पत्नी, विद्रोहिणी बनकर अन्य पुरुष को अपना लेती है। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में पुरुष के अन्याय को चुपचाप सहने की बजाय विद्रोह कर उठनेवाली नारी इसमें चित्रित की गई है।

'ताँगेवाला' यह कहानी समाज की कुप्रवृत्तियों का चित्रण करती है।

६) काले साहब : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९५०, प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन गृह, ५,खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद ।

प्रस्तुत संग्रह में अश्कजी की नई-पुरानी कहानियाँ एवं विभिन्न रसों का परिपाक दिखाई देता है। कहानियों के अतिरिक्त इस में 'काश्मीरी लाला अश्क' यह संस्मरण भी है।

'काले साहब' कहानी एक ऐसे रिक्शेवाले से सम्बन्धित है, जो काले साहबों के मनोविज्ञान से अच्छी तरह परिचित है। स्वतंत्रता के पश्चात् देश में पनपने वाला यह वर्ग अपने आपको गोरे साहबों से किसी प्रकार कम नहीं समझता और रिक्शावाला है कि वह इनसे निपटने की कला में उस्ताद। काले साहब से रिक्शावाले द्वारा ज्यादा से ज्यादा पैसा निकाल लेने की घटना जहाँ मन को गुदगुदाती है, वहीं काले साहबों के खोखले आचरण की वृत्ति पर प्रहार भी करती है।

'सतीत्व का आदर्श' की भारतीय परंपरा में पत्नी नायिका मृत्युपर्यन्त पति के पाशवी अत्याचार चुपचाप सह लेती है।

'अड्डी चूक भूतना' कहानी में लेखक ने हमारे घर-परिवार और स्कूलों में बच्चों पर होनेवेले घातक संस्कारों को स्पष्ट किया है, जो आज भी हमारे सामने एक समस्या है।

'भिश्ती की बीबी' कहानी के माध्यम से अश्क मनुष्य के स्वभाव की

गहराई की तह तक छू गये है। भिश्ती के बीमार पड़ जानेपर उसकी खूबसूरत, जवान बीबी चौधरी साहब के घर पानी भरने जाती है। चौधरी साहब उस औरत को बुरी तरह चाहते हैं। अपने घर में पाकर उसपर बलात्कार करने की भी सोचते हैं। चौधरी और भिश्ती की बीबी के बीच थोडी-सी छीना-झपटी होती है और अपनी आबरु के साथ साथ जान भी बचाकर रक्खो-भिश्ती की बीबी अपने बीमार पति के पास आ जाती है। थोडी देर बाद चौधरी का नौकर रक्खो के घर आकर ननकू-रक्खो के पति के हाथ में दस रुपये इलाज के लिए दे जाता है। " 'भगोडा', उसने मन ही मन कहा और बालों की लट हटाते हुए झाडू-बुहारी में जुट गई।"६

'मर्द का एतबार' कहानी में प्रो. गुप्ता का चरित्र हर बार नयी औरत से प्यार करने पर मजबूर है। यह नहीं कि पहली पत्नी से प्रो. गुप्ता उब चुके थे और दूसरी को उन्हों ने चाहा नहीं था। प्रो. गुप्ता पहली पत्नी के मर जाने पर दूसरी की मृत्यु के उपरांत तीसरी को भी चाहने लगे।

'बरूँसी का फूल और भैंस' में पूँजीवादी सत्ताधारियों पर की हुई आलोचना है, जो कला के पारखी और पोषक होने का दम भरने के बावजूद कला क्या है, जानते नहीं हैं।

'चैन का अभिलाषी' अश्क की रोमांटिक कहानी है, जिसपर आस्कर वाइल्ड की 'हैपी प्रिन्स' का प्रभाव स्पष्ट है। इसमें राजा विक्रमादित्य भेस बदलकर उज्जैन नगर की गलियों में घूम घूमकर प्रजा के दुख दर्द को जानता है। एक दिन महल लौटने पर राजा ने विभिन्न सवाल विद्वानों से पूछे और नवरत्न चुने। निर्धनता के बिनाश का कार्यभार राजा ने उस ब्राम्हण पर सौंपा, जो शांति का मूल सम्पन्नता में देखता था।

'कालू' कहानी यौन भावना के प्रकृत रुप का उद्घाटन यथार्थ रुप में

करती है। वासना की अंधी भूख का यथातथ्य चित्रण 'कालू' के अंधे कुत्ते और पतीकी नामक कुतिया के माध्यम से किया है।

'ज्ञानी' कहानी पंजाब के विभाजन एवं साम्प्रदायिक दंगे की पृष्ठभूमि पर आधारित है। सरदार करतारसिंह जो 'वाहे गुरु' का नाम ले स्वयं को ज्ञानी समझते थे और बडे संत होने का दावा करते थे, वे ही स्वयं साम्प्रदायिक दंगे में मुसलमानों के घर लूटने में आगे रहे। इस कहानी में सत्य एवं अहिंसा का डंका पीटनेवाले लोगों का लुच्चापन देखकर हँसी आती है, तो निरीह जनता के प्रति लोगों के अमानुषिक कृत्यों को देखकर आक्रोश उत्पन्न होता है।

'काकडा का तेली' कहानी देहात की गरीबी का यथार्थ प्रतीक लेकर उभरी है। इस में हमारे गांवों की व्यथा और बेबसी दिखाई देती है। कहानी का नायक काकडा का तेली मौलू, अपने भाई के लडके की शादी में भाग लेने अपनी बीबी-बच्चो के साथ पैदल लाहौर जा रहा है। कडी धूप, धूल भरा रास्ता और पैदल की थकान के बावजूद सवारी कर लेने के लिए उसके पास पैसे नहीं है। अंत में हार कर लाहौर के नज़दीक आकर भी वह अपने परिवार को एक बैलगाडी में बिठाकर वापस भेजता है और खुद अकेला ही लारी पकडने के लिए दौडता है। 'काकडा का तेली' कहानी में गरीब जीवन की विडम्बना का मार्मिक चित्रण है कि इतने कष्टों को सहकर जब मंझिल के बिल्कुल निकट पहुँच गये थे, फिर भी इच्छित स्थान तक जाने की साध लेकर उन्हें वापस लौटना पडा।

'भाई' कहानी एक आदर्श भाई के शील एवं कर्तव्यशीलता का परिचय देती है। बित्तो का भाई अपनी बहन की आवश्यकता के लिए अपनी पत्नी के गहनों को बेच देता है। इतना ही नहीं, तो बाद में भी सौ रुपये भेजकर अपनी बहन को पिता की नजरों में गिरने से बचा देता है और बहनोई के मान की रक्षा करता है।

'बगूले' कहानी अश्कजी की अति लघुकथाओं में से एक है, जो समाज के

ढोंग पर प्रकाश डालती है।

इन कहानियों के अतिरिक्त इस कहानीसंग्रह में 'नासूर' कहानी भी संग्रहीत है, जिसका विवरण 'निशानियाँ' कहानीसंग्रह में किया गया है। 'चारा काटने की मशीन' कहानी का विवरण 'छींटे' कहानीसंग्रह के विवरण में किया गया है।

७) जुदाई की शाम का गीत : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९५१, प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन गृह, ५, खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद ।

इस पुस्तक में उपेन्द्रनाथ अश्क की रोमानी किन्तु यथार्थवादी कहानियाँ संग्रहीत हैं।

इस संग्रह की शीर्षक कहानी 'जुदाई की शाम का गीत' इस से पहले 'निशानियाँ' कहानीसंग्रह में प्रकाशित हो चुकी है।

'अंकुर' अश्कजी की बहुचर्चित कहानियों में से एक है। इस कहानी की नायिका सेंकरी एक तेरह वर्षीय अबोध बाला है, जिसका विवाह एक बूढ़े से हो जाता है। अपने बूढ़े पति की ओर से उसे संदेह, भय, और घृणा के अलावा कुछ न मिला। फलत: वह किसी मनचाहे युवक को मन ही मन चाहने लगी। एक बच्चे की मां बन जाने की बावजूद भी उसकी सैक्स भावना दबी रही। सेंकरी के मन में उगा हुआ यह सैक्स का अंकुर बिलकुल स्वाभाविक है, मनोवैज्ञानिक यथार्थ है। सेंकरी के मन को खोलते हुए लेखक नें कहा है, -- "'अंकुर' उस यौनभावना का अंकुर है, जो ब्राम्हणी परमेश्वरी के लडके को देखकर --- सेंकरी के रौंदे हुए शरीर किन्तु कुंवारे हृदय में पैदा हो जाता है, पति के शक और संदेहशीलता से बढता है और जब उसका पति मरता है, तो उसी वृक्ष की छाया का सुख लेने को वह गहने रख लेती है, क्यों कि बाजार में भी बिक सकते है और उनसे रुपया प्राप्त कर मौज भी मनाई जा सकती है।"७

'उबाल' कहानी में अच्छे संस्कारों से वंचित कोई किशोर किन्हीं प्रेमियों को साथ साथ देखकर किन मानसिक दशाओं से गुजरता है, उसका उद्‌घाटन है। किशोर चंदन अपने मालिक और मालकिन की सेवा करते करते उनके प्यार भरे शब्द, प्यारी प्यारी हरकतें, चूमा-चाटी देखकर अपने अंदर की वासना की धधक महसूस करता है। शारीरिक, मानसिक तनाव की इस स्थिति से मुक्त होने के लिए वह पैसे लेकर बाहर निकलता है और वेश्याओं की दहलीज पर जाकर खडा होता है। नग्न और निर्लज्ज दृश्य देखकर, अश्लील संवाद सुनकर उसकी नसों का दूध उबलता है और चंदन के मानसिक एवं स्नायविक तनाव तथा उबाल पैदा होते हैं।

'फूल का अंजाम' एक रोमानी कहानी है। इसके नायक और नायिका एक दूसरे से आकस्मिक रुप से मिलते हैं। नायिका सुशिक्षित, सुंदर और सुसभ्य-जैसे कोई अंगूर की लता या विकसित हुआ कमल का फूल है। नायक पढ़ा लिखा और प्रसिध्द अभिनेता है। आगे चलकर नायिका इसलिए दुखी है कि वह भी अभिनेत्री बन गई और अपने प्रिय को गंवा दिया।

'सपने' कहानी में सदैव तीन लाख रुपये मिलने के और उससे सुन्दर बंगला बनाने के सपने देखनेवाला लेखक मैले-कुचैले, भूखे-नंगे, भिखारियों से घृणा करता है। अमीर बनने के जागृत सपने देखनेवाला नायक और फूटपाथ पर एक दूसरी को तकिया बनाये पडी कुछ भिखारी स्त्रियों को देखने के लिए रात को सड़क पर घूमने निकलनेवाले आवारा लडके इनकी यह कहानी है।

'३२४' कहानी में पेट की मजबूरी के कारण मिस् वाल्टन का बोझा ढोते ढोते निर्जीव होनेवाले हैदर का चित्रण है।

इस कहानी संग्रह की अन्य कहानियाँ 'चट्टान', 'वह मेरी मंगेतर थी', 'पहेली', 'चित्रकार की मौत', 'निशानियाँ', 'नज्जिया', 'बदरी', 'जादूगरनी', 'नरक का चुनाव', 'मरीचिका', 'जुदाई की शाम का गीत' ये कहानियाँ इस संग्रह के

पहले 'निशानियाँ' कहानीसंग्रह में प्रकाशित हो चुकी हैं।

८) **कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल : (कहानी संग्रह)**

प्रकाशन वर्ष १९५७, प्रकाशक : उपासना प्रकाशन, इलाहाबाद।

यह पुस्तक अश्क की कहानियों का सातवाँ संग्रह है। इस में कहानियों के अतिरिक्त दो दर्द भरे संस्मरण और मनोरंजक रेखाचित्र भी संग्रहीत है। इसकी अधिकांश कहानियाँ काश्मीर से सम्बन्धित हैं। इस संग्रह में आठ कहानियाँ संग्रहीत हैं। इन कहानियों में अनुभूति के गहराई के चित्रों का प्रदर्शन हुआ है।

इसमें ' वेपा के नगर में' कहानी का रुप लगभग यात्रा विवरण जैसा है, किन्तु अंतिम अंश में जिस कहानी का उल्लेख आता है, उसके कारण यह यात्रा विवरण, विवरण मात्र न रहकर एक ऐसे युवा व्यक्ति की कहानी बन जाती है, जिसने अपनी मृत्यु को मानव की कामना के लिए पुकारा।

'मेमने' और 'घिसा हुआ पत्ता' इन कहानियों में दलित तथा निम्नवर्ग के युवकों का चित्रण किया गया है। मेमना चुरानेवाले एक युवक को चोर कहकर उसके साथ लोग किस पशुता से पेश आए और निर्मम होकर उन्होंने किस प्रकार उसे अधमरा-सा कर दिया इस का वर्णन है। बम्बई में बैरे का काम करनेवाले ऐसे ही एक दलित निम्नवर्ग के युवा का चित्र 'घिसा हुआ पत्ता' कहानी में उतारा गया है। एक शादी-शुदा युवा व्यक्ति, चाहे वह बैरा ही क्यों न हो, किन किन मानसिक और स्नायविक तनावों से गुजरता होगा, जब वह तीन-तीन, चार-चार साल अपने गांव से, परिवार से, युवा बीबी से दूर रहे। एकाकीपन में दो-दो, तीन-तीन फिल्म शो देखता है, ऊँचे होटलों में जाकर खाना खाने और बाद में बैरे के हाथ में दिलेरी से टिप के रुप में बडी सी रकम देना उसके संतोष की बात है। अपने परिवार से परिस्थिति-वश

... कटा हुआ 'घिसा हुआ पत्ता' का बैरा लाटरी का टिकट खरीदकर अपने परिवार के सपनों में खो जाता है।

'कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल' कहानी आकाश में विचर कर यथार्थ को ग्रहण करने का, जीवनवादी साहित्य लिखने का स्वप्न देखनेवाली एक स्त्री लेखिका की आलोचना है। अपने पति और बच्चे सहित काश्मीर की सैर करते करते लेखिका काश्मीर जीवन के यथार्थ से प्रभावित होकर मन में कथानक रचती है। कहानी लेखक की जिस प्रक्रिया से लेखिका गुजर रही है, वह हास्यास्पद और व्यंग्यात्मक है। पैड और पेन्सिल लेकर पुल के आसपास का वातावरण देख देख कर नोट करना लेखिका के लिए आवश्यक है। किन्तु वह गंदगी और सुंदरता, परिश्रम और जीवन शक्ति, नम्रता और यथार्थता से भरे जीवन में से गुजरने के बावजूद उसके आसपास बिखरे अपनी कहानियों के औजारों से बेखबर आँखें बंद कर लेती है। अश्कजी 'कहानी लेखिका' की इस मूर्खता की ओर बार बार संकेत करते हैं।

'दालिये' कहानी काश्मीर की सामाजिक स्थिति और दरिद्रता का वर्णन करती हुई विजिटर लोगों की कंजूसी पर किया गया व्यंग्य है।

'हीरो का रोल' कहानी युवकों के मन में होनेवाले फिल्मी दुनिया की जगमगाहट के आकर्षण पर व्यंग्य करती है। इसमें एक दिन खुद हीरो बनने की इच्छा कर, उसे पूरी करने के लिए भले-बुरे मार्गों पर चलनेवाले युवकों का चित्रण है।

'मौसी' कहानी में एक घरेलु नौकरानी के स्वभाव का हास्य-व्यंग्यपूर्ण चित्रण है।

१) <u>सत्तर</u> <u>श्रेष्ठ</u> <u>कहानियाँ</u> : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९५८, प्रकाशक : उपासना प्रकाशन, ५, खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद ।

यह अश्कजी का बृहत् कहानी संग्रह है। पुस्तक के आरम्भ में कहानियों के साथ ही उनका लेखन काल भी दिया गया है, जिस से कहानी के ऐतिहासिक विकास की दिशा का ज्ञान होता है। इन में अश्कजी की सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ संकलित हैं। इस पुस्तक में 'मेरे कहानी लेखन के बत्तीस वर्ष' नामक अश्क का एक लेख भी संलग्न है, जिस में लेखक ने अपने विगत वर्षों की कहानी कला पर प्रकाश डाला है। पुस्तक में संकलित अधिकांश,कहानियाँ अन्य कहानीसंग्रहों से चुनी हुई हैं।

१०) <u>अश्क की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ</u> : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९६०, प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद १

इस कृति में अश्क की केवल वहीं कहानियाँ संकलित की गयी है, जो सर्वाधिक लोकप्रिय हुई हैं, निरन्तर पाठ्यपुस्तकों का अंग बनी है और जिनके अनुवाद देशीय और विदेशीय भाषाओं में हुए हैं। इसमें कुल ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। पुस्तक के आरम्भ में 'कहानी की विकार रेखा' नामक एक लेख अश्क ने स्वयं लिखा है, जिस में कहानी का रुप और उद्देश बताया गया है।

११) <u>पलंग</u> : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९६१, प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन, ५ खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद ।

इस कहानी संग्रह की कहानियों में अश्कजी की प्रतिभा की प्रौढता के दर्शन होते हैं। इन कहानियों का शिल्प एवं वस्तु दोनों पुष्ट हैं। इस में अश्कजी की आठ कहानियाँ संग्रहीत हैं।

गरीबी के चक्रव्यूह में फंसे 'एम्बेसेडर' कहानी के भोला की ट्रेजेडी उसके गरीब ही नहीं, मेधावी होने में भी निहित है। युवा भोला अपनी गरीबी को पार कर सम्पन्नता की सीढियाँ आसानी से चढ सकता था किन्तु काम्पिटीशन में पास हो जाने की अदम्य लालसा, उसकी क्रियाशील मेधा, संवेदनशील मन और अनिवार यौन भूख एक

एक गर्त उसको निगल जाने पर तुली हुई है। वह गरीबी से उबकर काम्पिटीशन में बैठता है, काम्पिटीशन का अध्ययन उसके मन में तनाव पैदा करता है, तनाव से मुक्ति पाकर पढ सके इसलिए वह वेश्यागामी बनता है, वेश्या के पास जाकर बीमार और पागल बन जाता है। इस प्रकार गरीबी और पागलपन का, मेधावी युवक की मेधा का, खुद उसी के पैरों तले कुचल जाने का सिलसिला व्यक्तिगत न रहकर सामाजिक बन जाता है। निम्न वर्ग के युवा की ट्रेजेडी है।

'झाग और मुस्कान' निम्न वर्ग के परिवार में चलनेवाली दैनंदिन जिंदगी के दुख और ईर्ष्या, विषमता और तनाव के सिलसिले की आम गाथा है। निम्नवर्ग की नारी के सामाजिक स्थान को 'झाग और मुस्कान' रेखांकित करती है। लल्लन मेहतरानी शादी के बाद तुरंत महीनेभर में किसी और के घर नौकरानी बनकर दूसरे परिवार की दासी बन जाती है। घर के मर्दों के पैर दबाने तक की दासता इस नौकरी में शामिल है। लल्लन को अपनी जाति की हीनता का अहसास है। जवानी की एक लहर उठी नहीं कि लल्लन के मन का ज्वार सदा के लिए खामोश हो जाता है। गरीबी, भूख, परिश्रम और विषमताओं की धूप में क्षण क्षण सूखती जानेवाली लल्लन जवानी में ही खुद को बूढी अनुभव करने लगती है। अपनी पत्नी की इस दशा से हरिया परिचित होकर भी कुछ नहीं कहता। अपने घर की तंगी और पति की फूहडता के कारण स्वाभाविक रुप से लल्लन के मन में हरिया के प्रति विरक्ति का भाव जाग उठता है। संक्षेप में 'झाग और मुस्कान' में दलित जीवन की पारिवारिक एवं सामाजिक मजबूरियों का यथार्थ चित्रण है। मनचाहा पति एवं परिवेश न मिलनेपर नारी की होनेवाली कुण्ठा का चित्रण किया गया है।

'पलंग' कहानी में व्यक्ति का यौनभाव किस प्रकार शैशव काल की विकसित वृत्तियों से जुडा हुआ है उसका चित्रण किया गया है। कहानी के नायक केशी के मन

में अपनी मां का कुछ इस प्रकार प्रभाव है कि सुहागरात के अवसरपर माँ के द्वारा सजाये गये कमरे में, माँ की तसवीर के सामने वह अपनी दुल्हन के साथ सो नहीं सकता। 'ठहराव' कहानी में नारी-प्रेम के दो रुपों का मनोवैज्ञानिक उद्‌घाटन हुआ है। पहला प्रेम किशोर वयस में किया है। जिस में आवेग और गति है, अनिवार समर्पण की भावना है। दूसरा प्रेम नायिका अपने पति से करती है जिसे वह 'गहरा, नस नस में पैठकर रक्त का अंग बन जानेवाल प्रेम"८ कहती है। इस प्यार की शुरुआत शक्को पति के प्रति प्रतिशोध भावना लेकर करती है, लेकिन पति के रुप और समझदारी के सामने उसका अहं झुक जाता है। दूसरे प्रेम के प्रथम अनुभव में ही शक्को अनुभव करती है कि, "जाने इस रात मेरे अंतर में स्नेह का कौनसा नया सोता फूट पडा, जी हुआ कि मैं अपनी दिवंगत सास जैसी बन जाऊँ और इस भटके शिशु को अपने अंक में भर लूँ।"९

'बेबसी' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। कोई कुरुप स्त्री वह गरीब हो या न हो, किसी सभ्य और शिक्षित पुरुष को अपने तन-मन से चाहे, लेकिन यह चाहना केवला चाहना ही रहे, तो उसकी शारीरिक, मानसिक व्यथा उसे किस कदर दयनीय बना देती है, इसका प्रामाणिक अंकन इस रचना में मिलता है। एक स्वस्थ लेकिन कुरुपा युवती, जो एक सुंदर, सुसंस्कृत लेकिन बीमार पुरुष को चाहे, और वह स्त्री उस पुरुष को मनाने, अनुकूल बनाने का अनुनय करे, फिर भी खाली हाथ लौटती रहे, यह बेबसी जीवन के यथार्थ से दूर नहीं है।

'खाली डिब्बा' कहानी में पागल के माध्यम से हमारी अतिरिक्त स्वार्थांधता, नितांत असामाजिक आचरण की प्रवृत्ति की आलोचना की है। खाली डिब्बे में एक नंगा यात्री अंदर से दरवाजा बंद कर सोया रहता है। बाहर से यात्री चिल्ला चिल्ला कर उसे दरवाजा खोलने के लिए मनाते हैं, किंतु वह मानता नहीं। यात्रा-कक्षों या सार्वजनिक स्थानों पर अपना पूरा अधिकार समझने की इस

UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

आकांक्षा की कटु आलोचना इस कहानी के नंगे पागल के माध्यम से की गई है।

'टोपियाँ और डाक्टर' कहानी में गोयल जी को इस बात का विश्वास था कि जब वे सिर पर टोपी नहीं पहनते, तो उन्हें ज़ुकाम हो जाता है और वे बीमार पडते हैं। इसी कारण वे हमेशा सिर पर टोपी पहनते थे। एक बार उन्होंनें टोपी पहनना छोडा, तो वे सचमुच बीमार पड गये। बहुत-से इलाज करने के बाद भी कोई असर नहीं पडा। फिर टोपी पहनना शुरु किया। तो फ़ौरन उनकी बीमारी दूर हो गयी। मनुष्य मन के वहम का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इस कहानी में किया गया है।

१२) <u>आकाशचारी</u> : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष सन् १९६६, प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन, ५, खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद ।

इस संग्रह में अश्कजी की सात कहानियाँ संग्रहीत हैं। इसकी कुछ कहानियाँ हास्य-व्यंग्यमय है, तो कुछ कहानियों के भाव गहरे एवं संश्लिष्ट भी हैं। शिल्प, शैली, कथावस्तु एवं बनावट की दृष्टि से इन कहानियों में पर्याप्त वैविध्य पाया जाता है। इस में दृष्टि की नवीनता के साथ पात्रों के अन्तर की गहराई पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

'आकाशचारी' कहानी में यथार्थ समाज से कटा हुआ व्यक्ति अयथार्थ, वायवी दुनिया का जीव बनकर अपने मस्तिष्क में अजीब अजीब फैंतसियाँ, कल्पनायें करता है, इस मनोवैज्ञानिकता को स्पष्ट किया है। अपने नाम और अहं को सर्वश्रेष्ठ समझनेवाला व्यक्ति आकाश में विचरने वाला जीव होता है। साहित्यकार होने का भ्रम वह पालता है जरुर, पर जीवन की वास्तविकताओं से विन्मुख होने के कारण वह इस दुनिया का लेखक नहीं बन सकता। वास्तविक जीवन से कटे रहकर भी जो व्यक्ति साहित्यकार के रुप में अपना नाम और इज्जत, प्रतिष्ठा तथा धन कमाते

हैं, उनकी वास्तविकताओं पर 'आकाशचारी' एक प्रामाणिक आलोचना है।

साहित्यिक दुनिया की गुटबाजी की आलोचना करते हुए 'फ़ितने' कहानी यह स्पष्ट करती है कि अपने लेखकत्व का लोहा प्रतिभाहीन व्यक्ति साहित्यकारों में चाहे मना लेता हो, साधारण व्यक्ति के सामने ऐसे लेखक नितांत मूर्ख साबित होंगे। ये लेखक अपनी रचनाओं को प्रकाशित, चर्चित करने के लिए सभी हथकंडों का प्रयोग करते हैं। 'फ़ितने' में अनिवार्यता या त्याग की अपेक्षा गुटबाजी और प्रचार के माध्यम से ढोल पीट लेने की लेखकीय दुनियादारी के यथार्थ को उजागर किया गया है।

'मगरमच्छ का भाषण' कहानी कोई कहानी नहीं, एक लेखक का दूसरे लेखकों से मुक्त वार्तालाप है। यह लेखक और समाज में अटूट सम्बन्ध मान, लेखन के प्रकाशन की बाधाओं का विवेचन करती है। आगे जाकर लेखकों को अश्क ने यह भी परामर्श दिया है कि लेखन यदि अनिवार्य है, तभी इन सब मुसीबतों के होने के बावजूद सृजा जायेगा। "इस मार्ग पर चलनेवाले के लिए मुसीबतें ही मुसीबतें हैं और इस पर वही चलता है, जो इस पर चले बिना नहीं रह सकता।"१०

'कार्टूनों का नायक' कहानी नेताओं की नेतागिरी के साथ प्रशासकीय कार्यप्रणाली पर व्यंग्य करती है। रेल के डिब्बे में होनेवाल पंखा दुरुस्त न होने के कारण यात्री तकलीफ महसूस कर रहे है। एक नेता डिब्बे में आकर इस असुविधा को सह नहीं पाता। हर एक स्टेशन पर गार्ड को बुलाकर बार-बार सूचना देता रहता है। नायक मन ही मन इस नेता की और थर्डक्लास में यात्रा करनेवाले महात्मा गांधीजी की तुलना करते रहता है। रेल व्यवस्था के माध्यम से हमारे प्रशासकीय कार्यालयों, कर्मचारियों की 'कार्यकुशलता' पर व्यंग्य किया है।

'मरना और मारना' कहानी अर्थहीन मृत्यु और उससे जुडे हुये सैक्स को एक दूसरे की सापेक्षता में झाँकने का प्रयास है। इससे मानव जीवन की मृत्यु और

कामवासना की प्रकृत प्रवृत्तियां आमने सामने रखकर दर्शायी गयी है। मानवीय जीवन के दो बुनियादी तत्वों का एक रुप अश्क ने यहां दिखाया है।

'एक उदासीन शाम' कहानी में एक बूढे प्रोफेसर के मन में अपनी समस्त शिक्षा-दीक्षा एवं पद-ओहदों के बावजूद एक किशोरी के प्रति अनिवार आकर्षण पैदा होता है। उस लडकी को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह नितांत प्रकृत स्तर पर उतरकर बच्चों की तरह छलाँगें लगाता है, उछलकूद करता है और अंतत: मृतप्राय हो जाता है। अश्कजी इस कहानी के माध्यम से मानव मन और शरीर के महत्वपूर्ण प्रकृत वासना के तत्व को यथार्थ जीवन से जोडकर देखना चाहते हैं।

घर मालिक और किरायेदार के आपसी सम्बन्धों को 'मोटा भाई' में यथार्थ अभिव्यक्ति मिली है।

१३) रौबदाब : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९६६, प्रकाशक : हिन्दी पाकेट बुक्स प्राईवेट लिमिटेड, जी. टी रोड, शाहदरा, दिल्ली ३२।

प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहीत सोलह कहानियाँ सीधे-सादे शुध्द हास्य और मनोरंजन से भरी है। कहानियों की भाषा व्यंग्यपूर्ण एवं चुटीली है। ये सभी कहानियाँ अन्य कहानी संग्रहों से चुनी गई हैं।

१४) वासना के स्वर : (कहानी संग्रह)

प्रकाशन वर्ष १९६७, प्रकाशक : हिन्दी पाकेट बुक्स, प्रायवेट लिमिटेड, जी. टी रोड, शाहदरा, दिल्ली ३२।

इस पुस्तक में संग्रहीत कहानियाँ मानव की दूसरी बडी भूख सैक्स का चित्रण करती है। सभी कहानियाँ तत्वपूर्ण, सोदेश्य हैं। इसमें संकलित छ: कहानियाँ अन्य कहानी संग्रहों से चुनी गयी है।

<u>अन्य कहानी संग्रह :</u>

अश्कजी के उपरोक्त कहानी संग्रहों से चुनी हुई कहानियाँ लेकर कुछ अन्य कहानी संग्रह भी प्रकाशित किये गये हैं।

जैसे - 'उबाल तथा अन्य कहानियाँ'

'मेरी प्रिय कहानियाँ'

'अश्क साहित्य धारा - चौतिस कहानियाँ' आदि।

!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!

—— संदर्भ ——

१) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ - उपेन्द्रनाथ अश्क ---- पृ. ३४

२) अश्क का कथा साहित्य - डा. अहिबरन सिंह ---- पृ. १६

३) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ - उपेन्द्रनाथ अश्क ---- पृ. ११४

४) वही - " ---- पृ. २१३

५) वही - " ---- पृ. ४९

६) काले साहब - उपेन्द्रनाथ अश्क ---- पृ. १३४

७) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ - वही ---- पृ. ४२

८) पलंग - वही ---- पृ. २१

९) वही - " ---- पृ. ३२

१०) आकाशचारी - " ---- पृ. ११

* * * * * * * * * *